टिप्पणी

8

इलेक्ट्रॉनिक संसाधन

8.1 परिचय

इंटरनेट के आगमन ने लोगों तथा संस्थाओं के कार्य संचालन को नाटकीय ढंग से परिवर्तित किया है। इसके परिणामस्वरूप ग्रंथालयों के कार्यों में तथा अपने पाठकों को सेवाएँ प्रदान करने में बहुत अधिक परिवर्तन आया हैं। वर्तमान में ग्रंथालय ई-रूप में पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, शोध ग्रंथों एव शोध प्रबंध के इन प्रारूपों के विशेषांकों को खरीदने, व्यवस्थित, एवं प्रदर्शित करने में व्यस्त हैं। यह उपयोक्ताओं के सूचना जानने के व्यवहार में परिवर्तन के कारण है। पाठकों की नई पीढ़ी ऑनलाइन ई-संसाधनों को चुनती हैं क्योंकि यह माउस का बटन दबाते ही सभी सूचनाएं प्राप्त कर लेना चाहती है। इन ई-संसाधनों की कुछ निश्चित नैसर्गिक विशेषताएं हैं जो पाठकों को सुविधा उपलबध करवाती हैं। इस पाठ के अंतर्गत ई-संसाधनों की अवधारणा एवं उनके महत्त्व पर विवेचन किया गया है। इसमें ई-संसाधनों के विभिन्न प्रकारों के साथ-साथ उनके लाभों तथा हानियों पर भी चर्चा की गई है।

8.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आप सक्षम होगें:

- ई-संसाधनों की परिभाषा तथा महत्त्व को समझने;
- ई-संसाधनों के विभिन्न प्रकारों का वर्गीकरण करने;
- ई-पुस्तकों तथा ई-पत्रिकाओं को परिभाषित करने;
- इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेसों की अवधारणा को जानने; और
- ग्रंथपरक एवं समग्र पाठ्य डाटाबेसों के बीच भेद करने में;

8.3 ई-संसाधन

ई-संसाधन ऐसी सामग्री है, जिसमें विषय वस्तु तक पहुँचने के लिये कंप्यूटर के माध्यम की

आवश्यकता होती है। ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों संसाधन जैसे सी डी-रोम ई-संसाधनों की क्षेत्र सीमा के अंतर्गत आते है। ई-संसाधन पद से अभिप्राय उन सभी उत्पादों से है जिनको, कंप्यूटर ग्रंथालय कम्प्यूटर नेटवर्क द्वारा प्रदान करता है।

इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को ऑनलाइन सूचना संसाधनों के नाम से भी जाना जाता है, इसके अंतर्गत ग्रंथपरक डाटाबेस, इलेक्ट्रॉनिक संदर्भ पुस्तक, समग्र पाठ्य पुस्तकों के लिए सर्च इंजन एवं डेटा के डिजिटल संग्रह शामिल हैं। इनमें वह डिजिटल सामग्री शामिल है जिसमें उन्हें सीधे कंप्यूटर पर ही उत्पादित किया है। उदाहरण के लिए, ई-पत्रिकाएँ, डाटाबेस तथा मुद्रित संसाधन जिन्हें स्कैन तथा डिजिटल रूप में परिवर्तित किया गया है। ग्रंथालयों के पास इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों, ई-पत्रिकाओं, ऑनलाइन डाटाबेसों का स्वामित्व नहीं है जैसे कि उनका अपनी संपत्ति मुद्रित सामग्री पर होता है। इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का स्वामित्व इन संसाधनों के उत्पादनकर्त्ताओं के पास है। इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों तक पहुँच इंटरनेट के द्वारा मुफ्त हो सकती है या शुल्क पर भी उपलब्ध हो सकती है।

ई-संसाधनों के कुछ उदाहरणों हैं मैगजीनें, विश्वकोश, समाचार पत्र, सामयिकियां या उनमें प्रकाशित लेख हैं। इन तक इंटरनेट से जुड़ा युक्तियों (डिवाइसेज) कंप्यूटर, टेबलेट्स, स्मार्ट फोन आदि के द्वारा भी पहुँचा जा सकता है।

8.3.1 ई-संसाधनों के लाभ

ई-संसाधनों के कई लाभ हैं उनमें से कुछ हैं :

- ई-संसाधनों तक इंटरनेट के जरिये पहुँचा जा सकता है। पाठकों को व्यक्तिगत रूप से ग्रंथालय में आने की आवश्यकता नहीं होती। पाठकों के लिए यह बहुत उपयोगी है जो कि दूरवर्ती तथा दूर क्षेत्रों में रहते हैं। पाठक लेखों को डाउनलोड कर सकते हैं तथा उन्हें दराज में सुरक्षित रख सकते हैं।
- ई-संसाधनों तक निजी कंप्यूटर (PC) से असीमित संख्या में पाठकों द्वारा एक ही समय पर आलेख या सामयिकी तक पहुँचा जा सकता है।
- ई-संसाधनों तक पाठक अपनी सुविधा के अनुसार किसी जगह से, किसी भी समय पर अभिगम कर सकते हैं।
- पाठक केवल एक सर्च इंटरफेस के द्वारा बहुत बड़ी संख्या में संसाधनों को एक ही बार में खोज सकते हैं।
- ई-संसाधन, प्रयोग के आंकड़े भी प्रदान करते हैं जो ग्रंथालय कर्मचारियों को उत्पाद के प्रयोग को जानने में सहायता करते हैं।
- पत्रिकाओं के लेख/अंक उनके मुद्रित संस्करणों से पहले ही ऑनलाइन उपलब्ध हो जाते हैं।
- ई-संसाधनों के हाइपर टैक्स्ट फार्मेट तथा ई-संसाधनों के लिंक्स के द्वारा पाठक, संबंधित विषय वस्तु तथा लेखों से जुड़ सकते हैं।

टिप्पणी

- इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों में श्रव्य, दृश्य तथा सजीवन (amination) विषय वस्तु का समावेश है जो कि अन्य मुद्रित प्रारूपों में उपस्थित नहीं होता।
- ई-संसाधनों का संग्रह ग्रंथालयों में कम स्थान घेरता है।

8.3.2 ई-संसाधनों की हानियाँ

- इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को इंटरनेट पर पढ़ने के लिए पाठकों को इंटरनेट की आवश्यकता होती है।
- यदि ग्रंथालय किसी ई-जर्नल के शुल्क को रद्द या बन्द कर देता है, तो उन जर्नल्स के पिछले विशेषांकों तक पहुँचना सुनिश्चित नहीं होता। जबकि ग्रंथालय के पास जो मुद्रित सामग्री है उन सामयिकियों के पिछले विशेषांक उनकी अधिकृत संपत्ति है। ई-पुस्तकों की स्थिति में भी, यदि ग्रंथालय ई-पुस्तकों के शुल्क को रोक देता है, तो उसके अभिगम को अस्वीकार कर दिया जाता है। जबकि खरीदी गई एक भौतिक प्रति हमेशा ग्रंथालय की अधिकृत संपत्ति के रूप में बनी रहती है।
- ई-संसाधनों का उपयोग पर्दे पर पढ़कर किया जाता है। जो मुश्किल तथा हानिकारक भी है।

8.3.3 ई-संसाधनों का प्रबंधन

ई-संसाधनों के प्रबंधन में निम्नलिखित शामिल है:

चयन

ई-संसाधनों का चयन निम्नलिखित किसी भी विधि से हो सकता है:

1. अज्ञात, संयोग वश उपयोगी तथा लाभकारी सामग्री का इंटरनेट पर साइटें खोलते समय अचानक ज्ञान होना।
2. संकाय की अनुशंसा पर
3. अन्य ग्रंथालयों द्वारा उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं की समीक्षा करते समय
4. प्रकाशकों के विज्ञापन

अधिग्रहण

ग्रंथालय, स्वामित्व के लिए मुद्रित संसाधनों को खरीदते हैं परंतु इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के लिए ग्रंथालय पहुँच के अधिकारों के लिए लाइसेंस को केवल प्राप्त करते हैं। ई-संसाधनों के अधि ग्रहण में निम्नलिखित कुछ महत्त्वपूर्ण गतिविधियां शामिल हैं:

1. शुल्क निर्धारित करना

2. विक्रेता के साथ मोलभाव करना
3. लाइसेंस के समझौते को पूरा करना
4. धनराशि का आबंटन
5. आदेश भेजना
6. जांच करके प्रमाणित करना शीर्षक सहज अभिगम्य है
7. यदि यह सहज अभिगम्य नहीं है तो विक्रेता को सूचना संप्रेषित करना
8. भुगतान के लिए बीजकों (इनवॉयस) की प्रक्रिया

कर्मचारीगण

ग्रंथालय को निर्णय लेना होता है कि ई-संसाधनों के अधिग्रहण का कार्य संपादन सामान्य नियमित कर्मचारी करेंगे अथवा इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों के साथ व्यवहार करने में विशेषज्ञ कर्मचारी निष्पादित करेंगे। ई-संसाधनों को खरीदने के उद्देश्य से लाइसेंस प्रक्रिया में कुशल, तथा इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों के साथ परिचित कर्मचारियों की आवश्यकता होती है।

लाइसेंस

लाइसेंस सामान्यत: ग्रंथालय एवं प्रकाशक के बीच एक लिखित अनुबंध पत्र या समझौता है। इस अनुबंध पत्र में विभिन्न पहलु होते है, जैसे भुगतान की गणना करने की विधि, उपयोक्ताओं की परिभाषा, उपयोग पर पाबंदी, पुराने लेखों के संग्रह का अधिकार आदि। लाइसेंस समझौते सामान्यत: विक्रेताओं के लाभ के लिए लिखे जाते हैं। इसलिए ग्रंथालय कर्मचारियों को बातचीत में अतिरिक्त सावधानी पूर्वक शर्तें रखनी पड़ती हैं।

बजट

ई-संसाधनों को प्राप्त करने के लिए ग्रंथालय प्राय: अलग से बजट रखते हैं।

प्रसूचीकरण

ई-संसाधनों को सूचीबद्ध करके उनके विवरणों को ग्रंथालय के ओपेक में शामिल करते हैं। कुछ ग्रंथालयों ने यह निर्णय लिया है कि वे उनकी सूची को वेबसाइट पर उपलब्ध करायेंगे तथा उनके लिंक्स प्रदान करेंगे। अत: संभव है वे उन्हें प्रसूचीबद्ध न करें।

अनुरक्षण

ई-संसाधनों के लिए अनुरक्षण एक महत्त्वपूर्ण विषय है। ग्रंथालय के कर्मचारी ई-संसाधनों का अनुरक्षण करते हैं। कर्मचारी यह सुनिश्चित करते हैं कि सशुल्क ई-संसाधनों को संस्था के इण्टरनेट प्रोटोकॉल पर अभिगम किया जा सके। कुछ ई-संसाधनों को उपयोक्ता के नाम (UN) पासवर्ड (PW) के द्वारा देखा जा सकता है। अधिकृत उपयोक्ताओं को कर्मचारियों द्वारा यूजर

नाम व पासवर्ड (UN/PW) वितरित करने का काम सौंपा जाता है। यदि किसी स्थिति में ई-संसाधन अभिगम्य नहीं हैं तथा कर्मचारी समस्या को हल नहीं कर पाते हैं, तो इस विषय में प्रकाशक को सूचना भेजकर समस्याओं को हल किया जाता है।

कर्मचारी प्रशिक्षण तथा उपभोक्ता शिक्षा

कर्मचारियों को ई-संसाधनों से सूचना को अभिगम करने, खोजने तथा पुन:प्राप्ति के कार्य में प्रशिक्षित करना होता है। ग्रंथालयों द्वारा उपयोक्ता शिक्षा कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है जिससे उपयोक्ताओं को सिखाया जाए कि ई-संसाधनों का उपयोग कैसे किया जाये तथा उपयोक्ताओं के बीच ई-संसाधनों के उपयोग को बढ़ाया जा सके।

8.3.4 ई-संसाधनों के वर्ग

ई-संसाधनों के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख निम्नलिखित है:

- ई-सामयिकियां (जर्नल्स)
- ई-पुस्तकें
- इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस
- ई-प्रतिवेदन
- ई-शोधग्रंथ एवं लघु शोध प्रबंध
- संस्थागत् संग्रह स्थल

निम्न अनुभागों में इनके संबंध में विचार किया गया है।

8.4 ई-सामयिकियां

ई-सामयिकी को इस प्रकार परिभाषित किया गया है—ऐसा प्रकाशन जिसे सामान्यत: इंटरनेट पर इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों में प्रकाशित किया जाता है। एक सामयिक प्रकाशन से तात्पर्य है ऐसा प्रकाशन जिसकी निश्चित अवधि होती है। ये सप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, तिमाही, वार्षिक आदि अवधि में प्रकाशित हो सकते है। 'इलेक्ट्रॉनिक सामयिकी' शब्द निम्न के लिए प्रयुक्त किया गया है:

- किसी प्रतिष्ठित मुद्रित पत्रिका का इलेक्ट्रॉनिक रूपांतर है, जैसे *सैल, न्यू साइंटिस्ट, साइंटिफिक अमेरिकन* आदि।
- मात्र ई-पत्रिका, जैसे *एरीडने, डी. लिब मैगज़ीन, आदि*
- एक प्रतिष्ठित पत्रिका मुद्रित संस्करण को बंद भी कर सकती है तथा इसे मात्र ई-प्रारूप में ही रूपांतरित कर सकती है।
- ई-पत्रिका को निशुल्क या वार्षिक शुल्क साहित, लाइसेंस पर या प्रत्येक उपयोग के लिए भुगतान पर, प्राप्त किया जा सकता है।

नेचर पत्रिका का स्क्रीनशॉट नीचे प्रस्तुत है:

चित्र 8.1 नेचर पत्रिका के आवरण का स्नैपशॉट

स्रोत: http://www.nature.com/nature/current_issue.html

8.4.1 ई-सामयिकियों के लाभ

ई-सामयिकियों के निम्नलिखित लाभ हैं :

- उन्हें किसी भी स्थान तथा किसी भी समय अभिगम किया जा सकता है।
- विषय वस्तु सूचक मुख्य शब्दों का प्रयोग करके आकस्मिक ढंग से खोज कर सकते हैं।
- अतिरिक्त विषय वस्तु उपलब्ध होती है, जोकि मुद्रित में प्राय: उपलब्ध नहीं होती।
- भंडारण तथा जिल्दसाज़ी की आवश्यकता नहीं रहती।
- वर्तमान के साथ-साथ पिछले अंकों को भी देख सकते हैं।

8.4.2 ई-पत्रिकाओं से हानियां

वही जोकि पीछे पैराग्राफ 8.3.2 में दी गई हैं।

8.4.3 ग्रंथालय संघ (कंसौर्टिया)

धन की बचत के लिए ग्रंथालय किसी संघ (कंसौर्टिया) के माध्यम से भी ई-जर्नल उपलब्ध कराते हैं। कंसौर्टिया के इस दृष्टिकोण में पुस्तकें उपलबध कराने और जर्नल्स को साझा करने के लिये ग्रंथालय किसी सहकारी संस्था (एसोसिएशन) संचार तंत्र (नेटवर्क) अथवा किसी सहकारी संगठन का गठन करते हैं।। कनसोर्टियाँ के उदाहरण जो ई-संसाधनों के अभिगम प्रदान करते है:

टिप्पणी

डेलकॉन (Delcon) इलेक्ट्रॉनिक ग्रंथालय कनसोर्टियम (delcon.gov.in)

यूजीसी इन्फोनेट (UGC InfoNet) डिजिटल लाइब्रेरी कनसोर्टियम (http://www.inflibnet.ac.in/econ)

पाठगत प्रश्न 8.1

1. ई-संसाधन क्या है?
2. ई-संसाधनों के कम से कम तीन लाभों की चर्चा कीजिए।
3. ई-संसाधनों की कम से कम दो हानियों का उल्लेख कीजिए।

8.5 ई-पुस्तकें

ई-पुस्तक, जिसे इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल पुस्तक के नाम से भी जाना जाता है, एक पाठ्य-वस्तु (टेक्स्ट) तथा चित्रों पर आधारित, डिजिटल प्रारूप में प्रकाशन है। इसे कंप्यूटर या अन्य डिजिटल उपकरणों पर पढ़ने के लिए सृजित या प्रकाशित भी किया जाता है। मानक मुद्रित पुस्तकों के समान ही ई-पुस्तकें डिजिटल रूप में मानक पुस्तके हैं। ई-पुस्तकें अनेक प्रारूपों में उपलब्ध हैं। कुछ को पूर्ण रूप से डाउनलोड कर ऑफलाइन पढ़ सकते हैं। जबकि अन्य को केवल इंटरनेट से जुड़ने के बाद ऑनलाइन पर पढ़ सकते है।

8.5.1 ई-पुस्तकों से लाभ

ई-पुस्तकों से लाभ की सूची निम्नलिखित हैं–

- किसी भी जगह से तथा किसी भी समय अभिगम्य हैं।
- पाठक संबंधित पृष्ठों से टिप्पणियां बना, सुरक्षित तथा मुद्रित कर सकते हैं।
- मुख्य शब्दों के लिए पुस्तकों को खोज सकते हैं।
- दृश्य व श्रव्य विषयवस्तु तक पहुंच सकते है।
- ग्रंथालयों में स्थान व भंडारण की समस्या को कम या नगण्य बना दिया जाता है।
- ई-पुस्तकें क्षति, खोने तथा सुरक्षा संबंधी समस्याओं से मुक्त हैं।
- पुराने शीर्षक मुद्रण से बाहर नहीं होते।
- उत्पादन, माल भेजने तथा संभालने हेतु लागत कम लगेगी।

8.5.2 ई-पुस्तकों से हानियां

- अधिक से अधिक उपयोक्ताओं को अभिगम प्रदान करने के लिए ग्रंथालयों को अधिक संख्या में लाइसेंस खरीदने पड़ रहे हैं।

- ई-पुस्तकों से जानकारी प्राप्त करने हेतु बिजली या ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। यदि बिजली नहीं है, तो उपयोक्ता पुस्तक तक नहीं पहुंच सकते।
- प्रकाशक डीआरएम (डिजिटल अधिकार प्रबंधन) सॉफ्टवेयर का उपयोग ई-पुस्तकों के अभिगम को नियंत्रित करने के लिए करते हैं। इससे ई-पुस्तक को अन्य उपभोक्ताओं के साथ सांझा करने की सुविधा सीमित हो जाती है।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. ई-पुस्तक क्या है?
2. ई-पुस्तकों के लाभ लिखें।

8.5.3 ई-पुस्तकों का अभिगम या इनका उपयोग करना

ई-पुस्तकों की आपूर्ति विभिन्न प्रकाशकों तथा आपूर्तिकर्ताओं द्वारा की जाती है। विभिन्न प्रकाशकों द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले अभिगम के मॉडल, उपयोग के लिए निबंधन व शर्तें अलग-अलग हो सकती हैं।

- बाजार में उपलब्ध ई-पुस्तकों के लिए विभिन्न प्रकार के आपूर्तिकर्ता तथा व्यापार मॉडल मौजूद हैं। ग्रंथालयों में ई-पुस्तकों को बेचने के लिए प्रकाशक द्वारा विक्रेताओं को परामर्श हेतु विभिन्न व्यापार मॉडलों के विकल्प प्रस्तुत करते हैं।
- उपयोक्ताओं की संख्या: जो एक ही समय पर ई-पुस्तकों का उपयोग कर सकते है, एक प्रकाशक से दूसरे प्रकाशक के संदर्भ में भिन्न हो सकती है।
- ई-पुस्तकों प्रतिलिप्याधिकार (कॉपीराइट) कानूनों तथा डिजिटल अधिकार प्रबंधन के अधीन होती हैं। प्रतिलिप्याधिकार कानून उपयोक्ताओं को एक अध्याय या ई-पुस्तक का 5% या जो भी अधिक है, उसके मुद्रण करने की अनुमति प्रदान करता है। ज्यादातर प्रकाशक आपको मुद्रण या प्रतिलिपि बनाने की संख्या पर प्रतिबंध लगाते हैं तथा कुछ प्रकाशक उपभोक्ताओं को प्रति बनाने या मुद्रित करने की अनुमति प्रदान नहीं करते। कुछ प्रकाशक ई-पुस्तकों को केवल एक निश्चित, अवधि के लिए डाउनलोड करने की अनुमति देते हैं।

ई-पुस्तकों तक पहुँच के लिए उपयोक्ताओं के पास निम्नलिखित व्यवस्था होनी चाहिए:

- इंटरनेट अनुयोजकता (कनेक्टिविटी)
- अद्यतन इंटरनेट ब्राउजर जैसे इंटरनेट एक्सप्लोरर, क्रोम या फायरफॉक्स
- एडोब एक्रोबेट रीडर का अद्यतन संस्करण, क्योंकि ज्यादातर ई-पुस्तकों के लिए पीडीएफ (पोर्टेबल डॉक्यूमेण्ट फॉर्मेट) फाइल का उपयोग किया जाता है। (यह वह प्रारूप है (फॉर्मेट) जिसमें ई-पुस्तकें प्रदिर्शत होती है।)

- ई-पुस्तकों को कंप्यूटर पर पढ़ा जा सकता है या उन्हें किसी अन्य पढ़ने वाले उपकरण पर स्थानंतरित किया जा सकता है जैसे किण्डल, एनड्रॉइड, आइपैड, आइफोन, कोबो, ई-बुक रीडर, नूक (यह ई-पुस्तक रीडर है जिसे अमेरीकन पुस्तक विक्रेता बार्म्स एंड नोबल द्वारा विकसित किया गया है।), सोनी रीडर आदि।

- तीसरे पक्ष की वेबसाइट पर उपलब्ध ई-पुस्तकों तक अभिगम के लिए ग्रंथालय भुगतान करता है। जब कोई उपभोक्ता ई-पुस्तक के अभिगम के लिए इच्छुक होता है, तो वह उस फाइल को डाउनलोड करता है जो कुछ दिनों के पश्चात् स्वत: ही समाप्त हो जाता है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे भौतिक ग्रंथालय में उपयोक्ता पुस्तक को एक या दो सप्ताह के लिए आदान करता है और बाद में उसे ग्रंथालय में लौटा भी देता है।

ई-पुस्तकों के आपूर्तिकर्ताओं के कुछ उदाहरण नीचे दिये गए है :

- माईलाइब्रेरी myilibrary (http://www.myilibrary.com)
- ई ब्रेरी E-brary (http://www.e-brary.com/corp/index.jsp)
- एब्सको EBSCO (http://www.ebscohost.com/ebooks/home)
- स्प्रिंगर springer (http://www.springer.com/librarians/e-centent/ebooks/SGWID=0-40791-0-0-0)

स्प्रिंगर पर 88000 से अधिक ई-पुस्तकों को स्प्रिंगर लिंक के माध्यम से अभिगम उपलब्ध करवाया गया है। ग्रंथालय संपूर्ण वार्षिक संग्रह को खरीद सकते हैं या अपनी आवश्यकता के अनुसार कुछ विषयों के संग्रहों को खरीद सकते हैं। कुछेक शीर्षकों को प्राप्त करने के लिए ग्रंथालय संग्रह करने वालों से या ऑनलाइन स्टोरों से संपर्क रखते हैं जैसे अमेजोन.कॉम amazon.com या स्प्रिंगर.कॉम springer.com पर स्प्रिंगर दुकान/स्प्रिंगर के होम पृष्ठ का स्क्रीन शॉट नीचे दिया गया है:

चित्र 8.2 स्प्रिंगर वेबसाइट का स्क्रीनशॉट

स्रोत : http://www.springer.com/librarians/e-content/ebooks/SG WID=0-40791-0-0-0

ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस 20 विषय क्षेत्रों में 8000 शैक्षिणक मोनोग्राफ का अभिगम करवाती है जिसमें मानविकी, सामाजिक विज्ञान, चिकित्सा, कानून आदि विषय सम्मिलित हैं। इस लोकप्रिय प्लेटफॉर्म (मंच) को ऑक्सफोर्ड स्कॉलरशिप ऑनलाइन के नाम से भी जाना जाता है। नये शीर्षकों के साथ संग्रह को नियमित रूप से वर्ष में तीन बार अद्यतन किया जाता है।

ऑक्सफोर्ड स्कॉलरशिप ऑनलाइन का स्क्रीनशॉट नीचे दिया गया है।

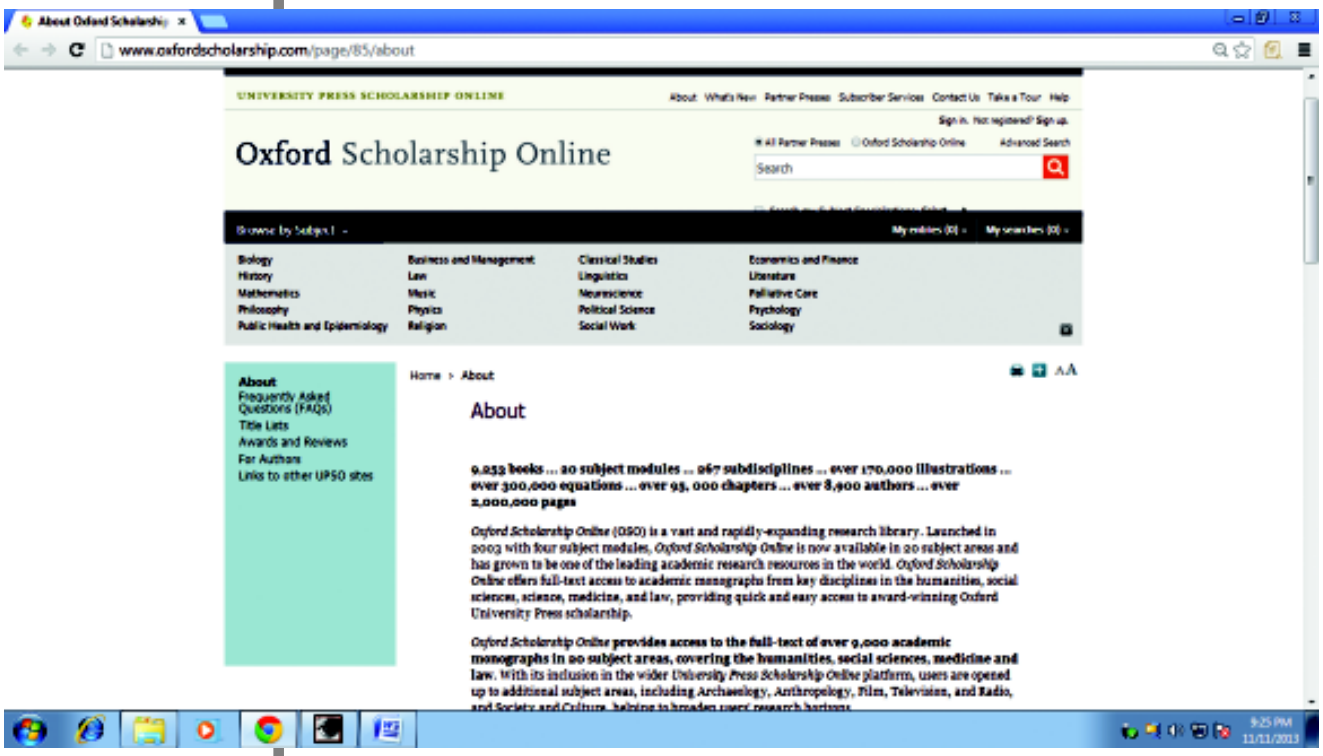

चित्र : 8.3 ऑक्सफोर्ड स्कॉलरशिप ऑनलाइन का स्क्रीन शॉट

स्रोत : http://www.oxfordschrolarship.com/page/85/about

सफारी तकनीकी पुस्तकें सफारी (Safari Technical Books Safari) 100 से अधिक प्रकाशकों की 8000 ई-पुस्तकें, विशेष तौर पर कंप्यूटर उपयोक्ता अनुप्रयोग में और पाठक एवं प्रशिक्षण निर्देश पुस्तिकाएँ (मैनुअल) उपलब्ध कराते है।

(http://www.safaribooksonline.com/mkt/brochureds/html/WhoWeAre.html)

टिप्पणी

इंटरनेट पर कई ई-पुस्तकें बिना शुल्क के भी उपलब्ध हैं। उनमें से कुछ के नाम हैं:

- कैरी CARRIE : पूर्ण पाठ्य इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी (http://ulib.iue.it/carrie)
- फ्री बुक्स (http://www.e-book.comau/freebooks.html)
- इंटरनेट क्लासिक आरकाइव (http://classics.mit.edu/)
- इंटरनेट पब्लिक लाइब्रेरी (http://www.ipl.org/)
- ऑनलाइन बुक्स पेज (http://www.digital.library-upenn.edu/books/)
- प्रोजेक्ट गटनबर्ग (http://www.gutenbery.org/wiki/main-page)
- यूसी प्रेस ई-बुक्स कलेक्शन (http://www.publishing.cdlib.org/ucpress books/)

यह सुनिश्चित है कि आनेवाले वर्षों में ई-पुस्तकें मुद्रित पुस्तकों का स्थान नहीं ले पाएंगी। उपयोक्ताओं, शोधकर्ताओं तथा संकाय सदस्य उन्हें मुद्रित पुस्तकों के पूरक के रूप में शीघ्रता से अपना सकते हैं। उपयोक्ता ई-पुस्तकों की सुविधापूर्वक व आसानी से अभिगम को बहुत मूल्यवान समझते हैं। यह अनुमान लगाया जाता है कि आने वाले 5 वर्षों में उपयोक्ता, शोधकर्ता तथा संकाय सदस्य कुछ पुस्तकों के इलेक्ट्रॉनिक संस्करण ही पसंद करेंगे। शोध संबंधित गतिविधियों के लिए तीव्रता से लेन-देन करेंगे। ई-पुस्तकों से शोध या खोज से संबंद्ध गतिविधियों के लिए शीघ्र परिवर्तन (ट्रांज़ीशन) संभव हो जायेगा। उपयोक्ता ई-पुस्तकों को परंपरागत रूप में क्रमिक पृष्ठों में नहीं पढ़ते, वरन उनका प्रयोग शोध प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने के लिए संसाधनों के रूप में करते हैं।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. ई-पुस्तकों के किन्हीं दो प्रकाशकों के नाम लिखिए।

2. ई-पुस्तकें सभी क्षेत्रों में मुद्रित पुस्तकों का स्थान नहीं ले पाएंगी, क्यों? विवेचना कीजिए।

8.6 इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस

डाटाबेस' शब्द का प्रयोग अभिलेखों के ऐसे संग्रह के लिए किया जाता है जोकि सांख्यिकी, पाठ्य या चित्र आधारित डाटा हो सकते हैं। यदि इसे वर्ल्ड वाइड वैब के द्वारा अभिगम करते है, तो इसे ऑनलाइन डाटाबेस के नाम से जाना जाता है। इंटरनेट के आगमन से पूर्व, ये ऑनलाइन डाटाबेस सीडी रोम डाटाबेस के रूप में उपलब्ध थे एक जर्नल डाटाबेस सामयिकी लेखों का संग्रह है जिसे व्यक्तिगत अभिलेखों में व्यवस्थित किया गया है और इन्हें खोजा भी जा सकता है। डाटाबेस बिब्लियोग्राफिक या पूर्ण पाठ्य हो सकते हैं।

8.6.1 वाङ्गमयात्मक (बिब्लियोग्राफिक) डाटाबेस

वाङ्गमयात्मक डाटाबेस संदर्भ ग्रंथपरक अभिलेखों का डाटाबेस है: यह प्रकाशित साहित्य के संदर्भों का व्यवस्थित डिजिटल (अंकीय) संग्रह है। यह सामान्यत: साधारण प्रकृति के हो सकते

हैं या विशिष्ट विषय क्षेत्र में। जे-गेट J Gate http://www.j-gate.informindia.co.in एक संदर्भ ग्रंथपरक डाटाबेस है जोकि 9483 प्रकाशकों के लिंक्स से प्रकाशक की साइट पर पूर्ण पाठ्य के 29513 ई-सामयिकियों से सामयिकी साहित्य, अनुक्रमणिका (इंडेक्स) की जानकारी प्रदान करते हैं। डाटाबेस केवल शुल्क सहित ही जानकारी देता है। सभी इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस उद्धरणों की जानकारी प्रदान करते हैं जोकि पाठकों को लेख या संसाधन के बारे में मूल प्रकाशन की सूचना देते हैं जैसे शीर्षक, लेखक, दिनांक तथा प्रकाशन का स्रोत।

डाटाबेस अधिकांश उद्धरणों के साथ सारांश भी प्रदान करते हैं जो कि लेख या संसाधन का संक्षिप्त सार होता है। उपभोक्ता एवं शोधकर्ता उद्धरण व सारांश को ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए लेख के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं, यह उन्हें निर्णय लेने में मदद करता है कि उन्हें पूर्ण लेख को पढ़ना चाहिए या नहीं। साधारण शब्दों में, सारांश शोधकर्त्ताओं में बहुत लोकप्रिय है क्योंकि ये विशिष्ट विषय के विस्तृत साहित्य में से तुलनात्मक लेख चुनने में सहायक होते हैं। कुछ मामलों में वे पूर्ण शोधलेखों के स्थान पर समुचित विकल्प भी उपलब्ध करा सकते हैं। कुछ अन्य उदाहरण निम्न हैं :

- ऐब्स्ट्रेक्ट ऑन हाइजीन एंड कम्यूनिकेबल डिज़ीज (ए.एच.सीडी) (http://www.cabi.org/default.aspx? site=170 & page = 1016 & pid = 70)
- करन्ट कॉनटेंट्स see eng. version

8.6.2 पूर्ण पाठ्य फुलटैक्स्ट डाटाबेस

जो डाटाबेस पत्रिका लेखों, पुस्तक पाठ, सम्मेलन लेख आदि के पूर्ण पाठ्य उपलब्ध कराते हैं उन्हें पूर्ण पाठ्य डाटाबेस कहते हैं। उदाहरणतया साइंस डायरैक्ट, JSTOR तथा प्रोक्वेस्ट (PROQUEST) है। पूर्ण पाठ्य अभिगम से अभिप्राय यह है कि उपभोक्ता पूर्ण पाठ्य लेखों को पढ़, सुरक्षित या मुद्रित कर सकते हैं। पूर्ण पाठ्य लेख एच.टी.एम.एल. या पी.डी.एफ प्रारूपों में हो सकते है। पूर्ण पाठ्य डाटाबेस के निम्नलिखित लाभ हैं:

- किसी लेख के पूर्ण पाठ्य को ढूंढ़ने में पाठकों के समय की बचत होती है।
- पाठकों की आशा के अनुरूप सामग्री के पूर्ण पाठ्य उपलब्ध कराने का अवसर देता है, जिसे वे द्वितीयक पत्रिकाओं में सूचीबद्ध किया हुआ देख चुके हैं।
- उपयोक्ताओं का नवीनतम शोधों तक अभिगम, सूचीबद्ध सुनिश्चित करता है।
- जर्नलों के पूर्ण खंडों का समावेश होता है जिसमें पत्रिकाओं के पुराने खंडों की बदली संख्या भी शामिल होती है।

वाइले wiley ऑनलाइन लाइब्रेरी में मल्टी डिसिप्लीनरी पूर्ण पाठ्य जैसे जीवविज्ञान, स्वास्थ्य, भौतिक तथा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों से ऑनलाइन संसाधनों के पूर्ण पाठ्य डाटाबेस हैं। यह 1500 पत्रिकाओं, लगभग 11500 ऑनलाइन पुस्तकों, संदर्भ रचनाओं तथा प्रयोगशाला सृजनों से लगभग 4 मिलियन लेखों की जानकारी प्रदान करते है। वाइले wiley ऑनलाइन लाइब्रेरी के पर्दे का स्क्रीनशॉट नीचे दिया गया है :

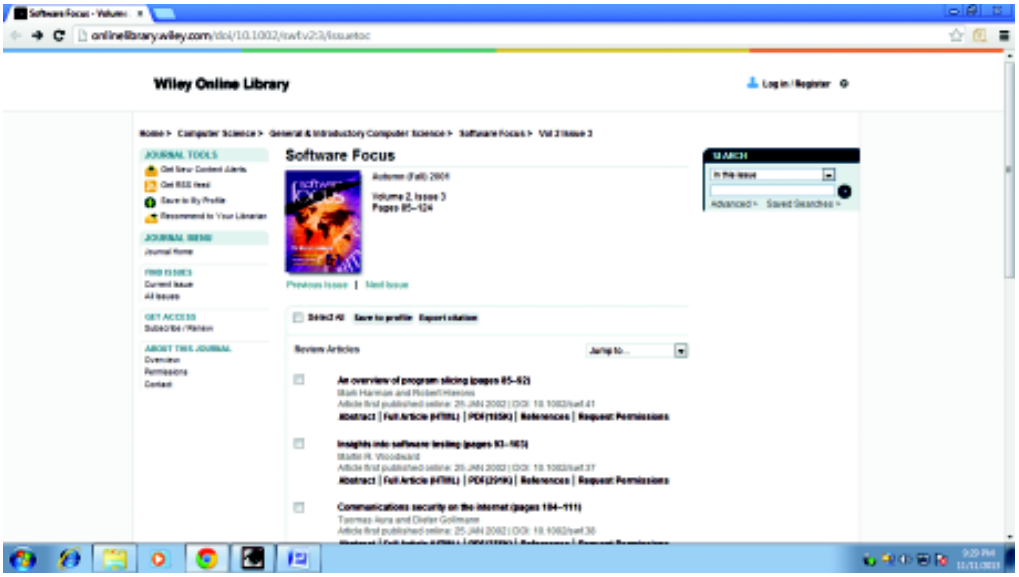

चित्र 8.3 ऑनलाइन लाइब्रेरी का स्क्रीन शॉट

स्रोत : http://onlinelibrary wiley.com/doi/10.1002/swf.v2:3/issue.toc

अन्य उदाहरण है:

- सी.ए.बी.आई CABI पूर्ण पाठ्य (http://www.cabi.org)
- अकादमिक सर्च कम्पलीट A cademic search (http://www.ebscohost.com/acadamic/academic search_complete)
- जेस्टोर (JSTOR) (http://www.jstor.org)
- प्रोजेक्ट म्यूज़ Muse (http://www.muse.jhu.edu)

पाठगत प्रश्न 8.4

1. एक इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस क्या है?
2. वाङ्गमयात्मक डाटाबेस क्या है?
3. उद्धरण एवं सारांश, शोधकर्ताओं के कार्यों में कैसे सहायता करते हैं?

8.7 ई-प्रतिवेदन

प्रतिवेदन एक ऐसा अभिलेख है जिसमें वर्णनात्मक, आरेखकीय या सारणीबद्ध प्रारूप में सूचना शामिल होती है; इसे आवश्यकतानुसार तदर्थ, सावधिक या नियमित आधार पर तैयार किया जाता है। प्रतिवेदन किसी विशिष्ट अवधि या घटना या विषय का वर्णन हो सकता है। इसे

मौखिक या लिखित रूप से सार्वजनिक कर सकते है। जो प्रतिवेदन डिजिटल रूप में उपलब्ध होता है; उसे ई-प्रतिवेदन नाम से भी जाना जाता है। उदाहरण के लिए, विश्वविद्यालय वार्षिक प्रतिवेदन प्रकाशित करते हैं जिसमें उनके बजट, व्यय, गतिविधियों तथा उपलब्धियों का लेखा-जोखा दिया होता है। ये प्रतिवेदन जानकारी के लिए इंटरनेट पर भी उपलब्ध होते हैं।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के वार्षिक प्रतिवेदन का स्क्रीन शॉट नीचे दिया गया है–

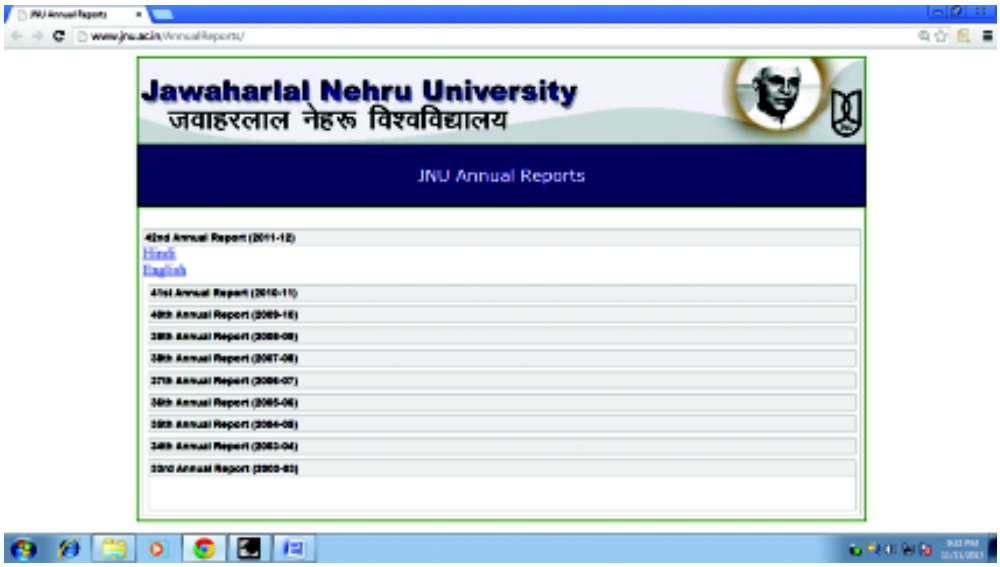

चित्र : 8.4 जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की वेबसाइट का स्क्रीन शॉट

स्रोत : http://www.jnu.ac.in/annual reports

योजना आयोग, भारत सरकार विभिन्न परियोजनाओं के शुरू होने पर, पूर्ण होने पर तथा विभिन्न कार्यों को पूरा करने के लिए समितियों के गठन के प्रतिवेदन प्रकाशित करता है। योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदनों का स्क्रीन शॉट नीचे दिया गया है–

चित्र 8.5 : योजना आयोग, भारत सरकार की वेबसाइट का स्क्रीन शॉट

स्रोत : http://www.planning commission.nic.in/reports/g

8.8 ई-शोध लेख एवं शोध प्रबंध

शोध प्रबंध या शोध लेख शैक्षिणक उपाधि या व्यावसायिक योग्यता के लिए उम्मीदवार के समर्थन में जमा किया गया एक अभिलेख है। यह विद्यार्थी द्वारा किये गए कार्य या शोध तथा उसके परिणामों या उपलब्धियों को प्रस्तुत करता है। उपयुक्त विश्वविद्यालयों/संस्थाओं में अपने शोध प्रबंध एवं शोध लेखों को मुद्रित रूप में प्रस्तुत करते है। शोध ग्रंथ व शोध लेख के डिजीटल रूप को ई-शोध-ग्रंथ व शोध लेख के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय विश्वविद्यालयों में एम फिल तथा पीएचडी के शोध छात्रों को अपने शोधग्रंथ व शोध लेखों की डिजिटल व सॉफ्ट प्रतियों को जमा कराना होता है। वर्तमान में ग्रंथालय उन शोध ग्रंथों व शोध लेखों का डिजिटाइजेशन करके इन्हें इंटरनेट पर अभिगम योग्य बना रहे हैं। अंकीय शोध प्रबंध के संग्रह को डिजिटल भंडार (रिपोजील्टी) भी कहा जाता है। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस, बंगलौर के डिजिटल भंडार का स्क्रीन शॉट नीचे दर्शाया गया है:

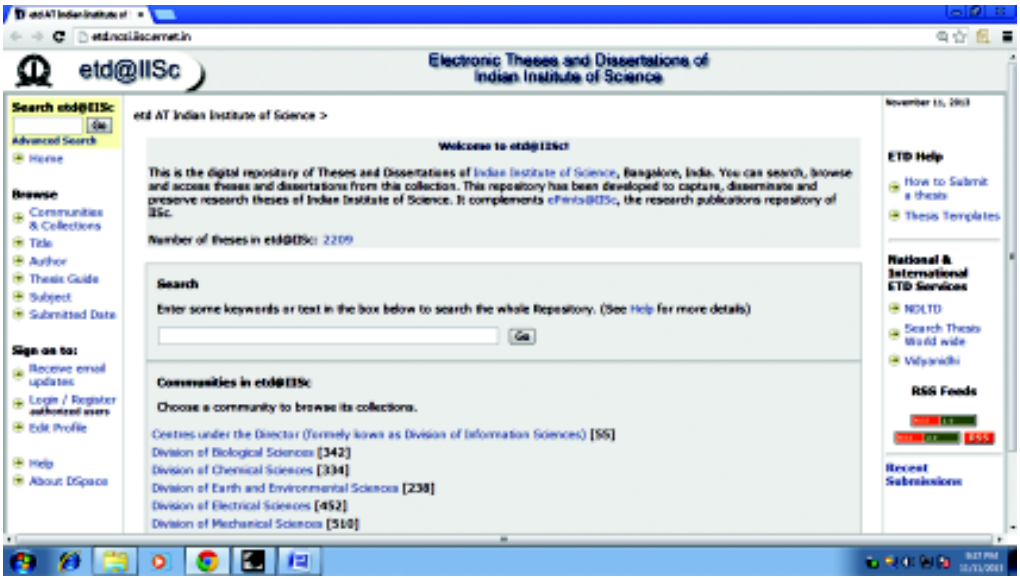

चित्र 8.6 इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस वेबसाइट चित्र

स्रोत : http://www.etd.ncsi.iisc.ernet.in

अन्य उदाहरण निम्न प्रकार से हैं:

Shodhganga@inflibnet केंद्र शोध छात्रों को उनकी पी.एच.डी. शोधग्रंथ की प्रति को जमा कराने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं तथा खुले अभिगम में से पूर्ण विद्धत समुदाय के लिए इसका मुक्त अभिगम उपलब्ध करवाते हैं। भंडार (रिपोजिटरी) के पास शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए शोध प्रबंधों और शोध लेखों का अभिग्रहण (कैप्चर) अनुक्रमणिकरण (इंडेक्स) भंडारण, प्रसार एवं संरक्षण करने की क्षमता होती है।

विद्यानिधि : मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा इलेक्ट्रॉनिक शोधग्रंथों का भारतीय अंकीय (डिजिटल) ग्रंथालय।

8.9 संस्थागत भंडार

संस्थागत भंडार एक ऑनलाइन डाटाबेस है जो ऑनलाइन देखने के लिए शोधग्रंथों, शोध लेखों के डिजीटल संग्रह की जानकारी प्रदान करते है। यह अभिलेख के विषय से संबंधित मेटाडाटा उपलब्ध कराते हैं जैसे विद्यार्थी का नाम या विश्वविद्यालय का नाम, स्नातक का वर्ष, प्रलेख शीर्षक, सारांश, विषय शीर्षक आदि। संस्थागत भंडार को डिजिटल भंडार के नाम से भी जाना जाता है। विश्वविद्यालय एवं शोध संस्थान इन भंडारों की स्थापना शोध उत्पादों को इकट्ठा, व्यवस्थित करने व उनके संकाय सदस्यों व वैज्ञानिकों के बौद्धिक योगदान को दर्शाने के लिए करते हैं। यह संस्थागत भंडार वार्षिक प्रतिवेदनों, पुराने वर्षों के प्रश्न पत्रों, विश्वविद्यालय व संस्था के शिक्षकों व वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित लेखों की पूर्व मुद्रित कृतियों की जानकारी भी प्रदान कर सकते हैं। इंडियन इंस्ट्यूट ऑफ साइंस के संस्थागत भंडार का e-prints@IISc के नाम से जाना जाता है, स्नैपशॉट नीचे दिया गया है :

चित्र 8.7 ऑनलाइन डाटाबेस शोध प्रबंधन व शोध लेखों का चित्र

स्रोत: http://www.eprints.iisc ernet.in

आपने क्या सीखा

इंटरनेट के आगमन ने ग्रंथालयों के खरीदने, व्यवस्थित करने तथा सूचना संसाधनों के प्रसार के तरीकों में एक अनुकरणीय परिवर्तन कर दिया है।

- ग्रंथालय अपने उपयोक्ताओं के लिए ई-संसाधनों के अतिरिक्त मुद्रित संग्रह को खरीदने में भी सक्रिय हैं। इनके सुविधाजनक होने के कारण उपयोक्ता ई-स्रोतों को ही प्राथमिकता देते हैं।

टिप्पणी

- ई-संसाधनों को किसी भी स्थान से अभिगम किया जा सकता है। ई-संसाधनों को बहुत बड़ी संख्या में एकल खोज इंटरफेस, हाइपरटैक्स तथा लिंक्स के द्वारा एक ही प्रयास में खोजा जा सकता है, और यह ई-संसाधन उपभोक्ताओं को संबंधित विषय वस्तु के संबंध में सही दिशा में विनिर्दिष्ट करने में सहायक होते है।
- कुछ ई-संसाधन हैं, ई-पत्रिकाएं, ऑनलाइन डाटाबेस तथा ई-पुस्तकें।
- ऐसे कई प्रकाशक, विक्रेता तथा एग्रीगेटर हैं जो विभिन्न व्यापार तथा पहुँच मॉडलों के द्वारा ग्रंथालयों को ई-संसाधन प्रदान करते हैं।
- जैसे कि मुद्रित संसाधन ग्रंथालयों के स्वामित्वाधिकार में हैं, ई-संसाधनों पर ग्रंथालयों को कोई स्वामित्व प्राप्त नहीं है। ग्रंथालय के पास केवल अभिगम का अधिकार है।

पाठांत प्रश्न

1. विभिन्न ई-संसाधनों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
2. पूर्ण पाठ्य तथा वाङ्गमयात्मक डाटाबेस के बीच अंतर बताइये और कुछ उदाहरणों सहित इनका वर्णन कीजिए।
3. संस्थागत भंडार को परिभाषित कीजिए तथा उदाहरण दीजिए।
4. ई-शोध ग्रंथ तथा शोध लेख क्या हैं? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
5. ग्रंथालयों में ई-संसाधनों का प्रबंधन कैसे होता हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. ई-संसाधन एक ऐसा सूचना का स्रोत है जिसे इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में अभिगम किया जा सकता है। ई-संसाधन के उदाहरण हैं ई-सामयिकियां, डाटाबेस, समाचार पत्र, मैगजीन आदि। उसकी विषय वस्तु को अभिगम करने तथा उपयोगी बनाने के लिए कंप्यूटर माध्यम की आवश्यकता होती है ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों ही संसाधन, ई-संसाधनों की क्षेत्र सीमा (स्कोप) के अंतर्गत आते हैं जैसे कि सीडी रोम। (CD. ROMS)
2. ई-संसाधनों के निम्नलिखित लाभ हैं:

   (i) ई-संसाधनों को दुनिया में किसी भी स्थान से इंटरनेट पर अभिगम किया जा सकता है। उपयोगकर्ताओं को ग्रंथालय में भौतिक रूप से आने की आवश्यकता नहीं होती। यह उन उपयोक्ताओं के लिए बहुत उपयोगी हैं जो दूरस्थ तथा दूर दराज के क्षेत्रों

में रहते हैं। उपयोगकर्ता अपने पीसी में इन लेखों को डाउनलोड तथा सुरक्षित रख सकते हैं।

(ii) ई-संसाधन के द्वारा किसी भी लेख, पत्रिका को उपयोक्ताओं की बहुत बड़ी संख्या के द्वारा एक ही समय पर अभिगम किया जा सकता है।

(iii) ई-संसाधन को संग्रहित करने के लिए मुद्रित संसाधनों की तरह भौतिक रूप में बहुत अधिक जगह की जरूरत भी नहीं होती है। जैसे संसाधनों के भंडारण में अधिक स्थान की आवश्यकता होती है।

3. ई-संसाधन से निम्नलिखित हानियां हैं :

(i) इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को पढ़ने के लिए पाठकों को इंटरनेट के उपयोग की आवश्यकता होती है। यदि एक पाठक के पास इंटरनेट संपर्क (कनेक्टिविटी) नहीं है, तो वह इलेक्ट्रॉनिक संसाधन तक अभिगम या उसे पढ़ नहीं सकता है।

(ii) यदि एक ग्रंथालय एक ई-पत्रिका के लिए सदस्यता शुल्क बंद या रद्द कर देता है, तो यह निश्चित नहीं है कि ग्रंथालय को उस पत्रिका के पूर्व अंकों तक उसकी पहुँच संभव हो सकेगी या नहीं दूसरी ओर ग्रंथालय जब मुद्रित पत्रिकाओं का शुल्क बंद कर देता है, जबकि भौतिक प्रतिलिपि को एक बार खरीद लिया जाता है, तो वह हमेशा ग्रंथालय के कब्जे में रहती है। ई-स्रोत में शुल्क बंद कर देने पर सुविधा लाभ तुरन्त बंद हो जाता है।

8.2

1. एक ई-पुस्तक को इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल पुस्तक के रूप में भी जाना जाता है, और यह डिजिटल प्रारूप में पाठ्य और चित्र (इमेज) आधारित प्रकाशन है। इसका उत्पादन ई-कंप्यूटर या अन्य डिजिटल उपकरणों पर पढ़े जाने के लिए प्रकाशित किया जाता है।

2. ई-पुस्तकों के निम्न लाभ हैं :

(i) वे ऑन तथा ऑफ परिसर (कैम्पस) से अभिगम किये जा सकते हैं।

(ii) ग्रंथालयों में संग्रह के लिए स्थान की समस्या समाप्त हो जाती है।

8.3

1. ई-पुस्तकों के निम्नलिखित प्रकाशक हैं–

(i) स्प्रिंगर : http://link.springer.com

(ii) टेलर एवं फ्रांसिस : http://www.tandfebooks.com

2. ई-पुस्तकों का उपयोग शोधकर्ताओं द्वारा अधिक किया जाता है, क्योंकि वे नवीनतम सूचनाओं तक अपनी सुविधानुसार अभिगम तथा खोज कर सकते हैं। अन्य क्षेत्रों में, मुद्रित पुस्तकें अभी भी बहुत लोकप्रिय हैं।

टिप्पणी

8.4

1. जो इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के पूर्ण पाठ्य को अभिगमित कराते है, उन्हें पूर्ण पाठ्य डाटाबेसों के नाम से भी जाना जाता हैं। जे स्टोर JSTOR http://www.jstor.org पूर्ण पाठ्य डाटाबेस का एक उदाहरण है।

2. वाङ्गमय डाटाबेस ग्रंथपरक अभिलेखों का एक डाटाबेस है; यह प्रकाशित साहित्य के संदर्भों का व्यवस्थित डिजिटल संग्रह है। यह सामान्य प्रकृति का अथवा विशिष्ट विषय क्षेत्र में हो सकता है।

3. उद्धरण और सारांश शोधकर्ताओं की मदद करते है जो उन्हें विभिन्न लेखों के लिए निर्दिष्ट करते हैं तथा ये उन्हें, यह निर्णय लेने में मदद करते हैं कि वे उस पूर्ण लेख को पढ़े या नहीं।

पारिभाषित शब्दावली

बॉर्न डिजिटल (Born digital)–यह उस सामग्री को संदर्भित करता है जिसे मूलत: डिजिटल रूप में तैयार किया गया हो बजाय कि मुद्रित रूप में तैयार करके फिर उसकी स्कैनिंग करके उसे डिजिटल बनाया गया हो।

डिजिटल राईट्स मैनेजमेंट (डीआरएम) (Digital Rights management (DRM))–इस शब्द में डिजिटल सामग्री से संबंधित स्वत्वाधिकारों के प्रयोग के सभी रूपों की निगरानी तथा विवरण, पहचान, व्यापार, सुरक्षा तथा जांच पड़ताल शामिल है। ई-पुस्तकों के साथ डीआरएम सॉफ्टवेयर का इस तरह से प्रयोग किया गया है कि यह प्रतिबंधित क्रियाओं जैसे मुद्रण, डाउनलोड करने तथा विभिन्न उपकरणों पर ई-पुस्तकों की विषय वस्तु का पुन: उपयोग इत्यादि की क्रियाओं को प्रतिबंधित कर देता है।

फुल टैक्स्ट डाटाबेस (Full Text Databases)–इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस जिसमें पत्रिकाओं में प्रकाशित पूर्ण विषय वस्तु के लेखों तक पहुँच प्रदान की जाती है उन्हें पूर्ण पाठ्य डाटाबेस कहते हैं।

मेटाडेटा (Metadata)–यह संरचित सूचना है जिसमें डाटा मद या डाटा मदों के संग्रह का वर्णन रहता है। यह डाटा के बारे में डाटा है।

पोर्टेबल डॉक्युमेंट फार्मेट (पीडीएफ) (Portable Document Format (PDF))–यह 1993 में एडोब सिस्टम द्वारा विकसित एक फाइल प्रारूप है। इसमें अभिलेख के स्रोत के मूल लक्षणों को सुरक्षित रखा जाता है फिर चाहे उसे किसी भी अनुप्रयोग, प्लेटफॉर्म तथा हार्डवेयर के प्रकार से अपने मूल रूप में रचित किया गया हो।

स्मार्ट फोन (Smart phones)–ये मोबाइल फोन उन्नत सॉफ्टवेयर वाले हैं जिनमें इंटरनेट से जुड़ने और वेबसाइटों पर ब्राउज करने के लिए सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।

टिप्पणी

प्रस्तावित क्रियाकलाप

1. कृपया सामयिकियों की वेबसाइट पर जायें तथा दस सामयिकियों के होमपेज के स्क्रीन शॉट लें।

2. करंट कंटेन्ट्स कनेक्ट (Current contents connect) की साइट पर जाकर उसके होमपेज का स्क्रीन शॉट लीजिए। इसमें शामिल मुख्य विषयों को लिखिए।

3. किसी पूर्ण पाठ्य डाटाबेस की वेबसाइट पर जायें। डाटाबेस का नाम, इसका यूआरएल विषयवस्तु (कंटेन्ट) तथा प्रस्तुत विवरण को लिखें।

4. किसी ग्रंथपरक (बिब्लियोग्राफिक) डाटाबेस की वेबसाइट पर जाएँ। डाटाबेस का नाम, उसका यूआरएल, कंटेन्ट तथा प्रस्तुत विवरण को लिखिए।

5. किसी प्रकाशक की ई-पुस्तकों की वेबसाइट पर जाएँ। उसके संग्रह तथा ई-पुस्तकों के विवरण के बारे में लिखिए।